The Hindu Plus Summary : 26.01.2024

मेन्स मास्टर

गणतंत्र और संविधान को पुनः प्राप्त करना

प्रसंग:

• 22 जनवरी, 2024 को भारतीय गणतंत्र के 75वें वर्ष का जश्न मनाने वाले राज्य-वित्त पोषित भव्य तमाशे के बीच प्रकाशित।

• यह लेख अयोध्या मंदिर के अभिषेक से मेल खाता है, जो हिंदू वर्चस्ववादी स्वरों के साथ एक अत्यधिक राजनीतिकरण वाली घटना है।

परिचय:

• लेखिका अरुणा रॉय, एक सामाजिक कार्यकर्ता, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एजेंडे के बारे में चिंता व्यक्त करती हैं जो भारतीय संविधान के धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों को कमजोर कर रहा है और एक आयामी हिंदू संस्कृति को बढ़ावा दे रहा है।

पृष्ठभूमि:

• 22 जनवरी, 1947 को जन्मे भारतीय संविधान ने अपनी प्रेरक प्रस्तावना के साथ विविधता और सहिष्णुता को अपनाने वाले एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र का वादा किया था।

• भारत के समृद्ध इतिहास और जीवंत सांस्कृतिक परिदृश्य की विशेषता कई धार्मिक प्रथाएं और जातीयताएं हैं।

भारत की धर्मनिरपेक्षता को ख़तरा:

• भाजपा के एजेंडे को इस प्रयास के रूप में देखा जाता है:

○ राज्य को ईश्वरीय और बहुसंख्यक धर्म को राजनीतिक बनायें।

○ एक-आयामी संस्कृति थोपना, विविधता को दबाना और असहमति को चुप कराना।

○ धर्म को केंद्रीकृत करना, जिसका लक्ष्य अन्य धर्मों पर हावी होना और उन्हें हाशिये पर धकेलना है।

• यह इनके लिए एक गंभीर ख़तरा है:

○ व्यक्तिगत और समूह आस्था और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।

○ संविधान के मूलभूत मूल्य: सभी के लिए स्वतंत्रता, समानता और न्याय।

○ बहुलवादी एवं सहिष्णु लोकतंत्र के रूप में भारत की विशिष्ट पहचान।

गंभीर अनुमान:

• लेख आलोचना करता है:

○ भाजपा अपनी हिंदुत्व विचारधारा का प्रचार करने के लिए लोकतांत्रिक स्वतंत्रता में हेरफेर कर रही है।

○ विविध सांस्कृतिक प्रथाओं और भाषाओं का दमन।

○ बहुसंख्यकवाद के संभावित खतरे और अल्पसंख्यकों और उनके अधिकारों के प्रति इसकी उपेक्षा।

· यह इसके महत्व पर प्रकाश डालता है:

○ संविधान के धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के क्षरण का विरोध करना।

○ धर्म या किसी अन्य पहचान की परवाह किए बिना सभी नागरिकों के अधिकारों और सम्मान की रक्षा करना।

○ सहिष्णुता और समावेशिता के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दोहराना।

पश्चिमी गोलार्ध:

· लेख इसकी आवश्यकता पर जोर देता है:

○ भाजपा के एजेंडे के खिलाफ सामूहिक जन प्रतिक्रिया।

○ भारत के भविष्य को आकार देने में संविधान की केंद्रीय भूमिका की पुष्टि करना।

○ सांस्कृतिक जीवंतता को विकसित करना और विविधता को भारत की असली ताकत के रूप में अपनाना।

○ सहिष्णुता और बहुलवाद के प्रतीक के रूप में दुनिया में भारत की स्थिति की रक्षा करना।

संक्षेप में, यह लेख सभी भारतीयों के लिए गणतंत्र और उसके धर्मनिरपेक्ष संविधान को पुनः प्राप्त करने, इसके संस्थापकों द्वारा देखे गए विविध और सहिष्णु भारत की रक्षा करने के लिए कार्रवाई का आह्वान है।

विपक्षी सांसद, संसदीय व्यवधान

प्रसंग:

• 2023 में संसद के शीतकालीन सत्र में भारत में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक बदलाव देखा गया।

• संसद में सुरक्षा उल्लंघन पर चर्चा के दौरान व्यवधान उत्पन्न करने के लिए कुल 141 विपक्षी सांसदों को निलंबित कर दिया गया।

पृष्ठभूमि:

• लोकतांत्रिक शासन में विविध दृष्टिकोणों और विपक्ष की भूमिका को दबाने के बारे में चिंताएँ व्यक्त की गईं।

• लोकतंत्र में विरोध और असहमति की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करना, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जोर को दोहराना।

हाल के रुझान और निष्कर्ष:

• निलंबित सांसदों के विश्लेषण से पार्टी लाइनों से परे व्यक्तियों के उल्लेखनीय योगदान का पता चलता है।

• कांग्रेस सदस्य शशि थरूर ने 94% उपस्थिति प्रदर्शित की, 99 बहसों में सक्रिय रहे और महत्वपूर्ण विषयों को कवर करते हुए 13 निजी सदस्य विधेयक पेश किए।
• तमिलनाडु से कांग्रेस के लोकसभा सदस्य एस. जोथिमनी ने 74% उपस्थिति प्रदर्शित की, सक्रिय रूप से विभिन्न विषयों को संबोधित किया और मासिक धर्म स्वच्छता और पितृत्व लाभ पर विधेयक पेश किए।
• राष्ट्रीय जनता दल के राज्यसभा सांसद मनोज कुमार झा ने 97% भागीदारी दर बनाए रखी, 347 प्रश्न उठाए और विधायी सुधारों पर विधेयक पेश किए।
• महाराष्ट्र से राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की तीन बार की सांसद सुप्रिया सुले ने 93% उपस्थिति दर्ज की, 238 बहसों में सक्रिय रहीं और 16 निजी सदस्य विधेयक पेश किए।
• असम के कलियाबोर से कांग्रेस के लोकसभा सांसद गौरव गोगोई ने 75% उपस्थिति दर्ज की, 74 बहसों में सक्रिय रहे और वायु गुणवत्ता प्रबंधन, कंपनी नियमों और प्रदूषण नियंत्रण पर विधेयक पेश किए।
• एनसीपी से राज्यसभा सांसद वंदना हेमंत चव्हाण ने 78% उपस्थिति बनाए रखी, 334 बहसों में शामिल रहीं, 687 सवाल उठाए और पांच निजी सदस्य विधेयक पेश किए।
• अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस के राज्यसभा सांसद डेरेक ओ'ब्रायन ने 81% उपस्थिति बनाए रखी, 315 बहसों में भाग लिया, 1,001 प्रश्न उठाए और सात निजी सदस्य विधेयक पेश किए।
• बहुजन समाज पार्टी के लोकसभा सांसद, कुँवर दानिश अली ने हाल ही में निलंबन के बावजूद, 97% उपस्थिति दर को बरकरार रखा, 140 बहसों में भाग लिया, 205 प्रश्न उठाए, और दो निजी सदस्य विधेयक पेश किए।

संसदीय लोकतंत्र पर प्रभाव:
• सांसदों के निलंबन से विपक्ष की मजबूती पर सवाल उठते हैं।
• संसदीय कार्यवाही के दौरान व्यवधान को निलंबित सांसदों के महत्वपूर्ण योगदान के विरुद्ध तौला जाता है।
• प्रभावी शासन और निर्णय लेने में समावेशिता में संभावित बाधा है।

गंभीर अनुमान:
• यह स्थिति विविध आवाजों की आवश्यकता पर बल देते हुए लोकतांत्रिक मानदंडों के आलोचनात्मक मूल्यांकन की मांग करती है।
• भारत की संसदीय यात्रा के लोकतांत्रिक ताने-बाने पर निलंबन का प्रभाव अनिश्चित बना हुआ है।
• चल रहे घटनाक्रम यह निर्धारित करेंगे कि यह एक क्षणिक व्यवधान है या परिवर्तनकारी चरण है।

आगे बढ़ने का रास्ता:
• जीवंत लोकतंत्र में खुलेपन, समावेशिता और सार्थक संवाद पर जोर देना आवश्यक है।
• सरकार और विपक्ष के बीच सहयोगात्मक संबंधों का पुनर्मूल्यांकन महत्वपूर्ण है।
• भारत के लोकतांत्रिक प्रक्षेप पथ को बनाए रखने के लिए विविध आवाजों को अनुमति देने की अनिवार्यता के साथ संसदीय कार्यवाही में व्यवस्था की आवश्यकता को संतुलित करना आवश्यक है।

आदान - प्रदान

पहल अवलोकन:
• केंद्र ने भारतीय मूल या वंश के वैज्ञानिकों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के लिए वैभव फ़ेलोशिप कार्यक्रम शुरू किया है।
• प्राप्तकर्ता परियोजनाओं या प्रौद्योगिकी स्टार्ट-अप शुरू करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए, भारत में एक मेजबान अनुसंधान प्रयोगशाला में तीन साल तक सालाना तीन महीने तक का समय बिता सकते हैं।

इसका उद्देश्य दीर्घकालिक संबंध बनाना, मेजबान संकाय के साथ सहयोग को प्रोत्साहित करना और भारतीय विश्वविद्यालय और अनुसंधान सेटिंग्स में नए विचार लाना है।

वज्र से तुलना:
• वैभव पहल उसी सरकार के कार्यकाल के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा शुरू की गई वज्र (विजिटिंग एडवांस्ड ज्वाइंट रिसर्च) संकाय योजना के साथ समानताएं साझा करती है।
• जबकि वज्र अन्य राष्ट्रीयताओं से भागीदारी की अनुमति देता है, वैभव विशेष रूप से भारतीय प्रवासियों को लक्षित करता है।
• वज्र की एक साल की प्रतिबद्धता के विपरीत, वैभव तीन साल की प्रतिबद्धता की पेशकश करता है।

चिंताएँ और विचार:
• लगभग 70 अंतरराष्ट्रीय संकाय ने वज्र में भाग लिया है, जिससे इसकी प्रभावशीलता के बारे में चिंताएं बढ़ गई हैं।
• मौजूदा प्रतिभा पलायन चुनौतियों पर विचार करते हुए, भारतीय प्रवासियों पर ध्यान केंद्रित करने में भारत के विशिष्ट उद्देश्यों पर स्पष्टता की आवश्यकता है।
• अल्पकालिक फ़ेलोशिप भारत में विज्ञान की संभावनाओं को प्रदर्शित करने में मदद कर सकती है, जिसमें फंडिंग अंतराल, अनुसंधान एवं विकास में सीमित निजी क्षेत्र की भागीदारी और शैक्षणिक स्वतंत्रता की कमी जैसी चुनौतियों को उजागर किया जा सकता है।

भारतीय प्रवासियों को निशाना बनाने के पीछे तर्क:
• 'प्रतिभा पलायन' के ऐतिहासिक मुद्दे को संबोधित करता है, जहां प्रतिभाशाली शोधकर्ता भारत में सीमित अवसरों के कारण विदेश चले गए।
• इसका उद्देश्य विदेशों में प्रशिक्षित कुशल वैज्ञानिक जनशक्ति के विशाल पूल का लाभ उठाना है, विशेष रूप से पश्चिमी विश्वविद्यालयों में स्थायी नौकरियों के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा को देखते हुए।
• अनुमान है कि भारतीय मूल के वैज्ञानिक संभवतः जातीय-राष्ट्रवादी विचारों से प्रभावित होकर रुकने या वापस लौटने के लिए अधिक इच्छुक हो सकते हैं।

यथार्थवादी अपेक्षाएँ और चुनौतियाँ:
• भारतीय मूल के वैज्ञानिकों के साथ जुड़ने में यथार्थवादी उम्मीदों के महत्व पर जोर देता है।
• इस बारे में सवाल उठाता है कि क्या जातीय-राष्ट्रवादी प्रतिबंध वास्तव में वैज्ञानिकों के वापस रुकने की अधिक संभावना पैदा करेगा।
• भारत के अनुसंधान परिदृश्य में चुनौतियों का खुलासा करने और नीतिगत बदलाव लाने में अल्पकालिक फ़ेलोशिप की भूमिका को स्वीकार करता है।

प्रीलिम्स बूस्टर

विश्व का सबसे बड़ा हिमखंड उत्तर की ओर बढ़ते ही लहरों से ढह गया

- दुनिया का सबसे बड़ा हिमखंड, A23a, अंटार्कटिक समुद्र में पाया गया, लगभग 4,000 वर्ग किमी, ग्रेटर लंदन के आकार का दोगुना।
- 4 मीटर ऊंची लहरों ने विशाल हिमखंड को तहस-नहस कर दिया।
- अंटार्कटिक महासागर तल पर तीन दशकों के बाद, A23a उत्तर की ओर बह रहा है, जिसमें अनुमानित एक ट्रिलियन टन ताज़ा पानी है।
- वर्तमान में एलिफेंट द्वीप और दक्षिण ओर्कनेय द्वीपों के बीच स्थित, इसका आंदोलन जलवायु परिवर्तन पर सवाल उठाता है; यह पिछले वर्ष मुक्त हो गया।